Writing a Research Proposal : M.A. I Sem II

अनुसंधान प्रस्ताव लेखन

व्यवहारिक विज्ञानों के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करने में रुचि प्रदर्शित करने के लिए इच्छा या मजबूरी, चाहे कोई भी कारण हो, अनुसंधानकर्त्ता को अपनी अनुसंधान यात्रा प्रारंभ करने हेतु एक उचित और सही मार्ग चुनने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। व्यवहारिक विज्ञानों में विषयों, प्रकरणों, क्षेत्रों, अन्वेषण के लिए समस्याओं तथा ऐसे प्रश्नों, जिनका उत्तर दिया जाना है, का कोई अंत या सीमा नहीं है। एक शोधकर्त्ता को अपने शोध अध्ययन के लिए इनमें से किसी एक विषय या क्षेत्र से संबंधित समस्या का चयन अपनी शोध समस्या के रूप में करना होता है। यह काफी कठिन और चुनौतीपूर्ण काम है।

अनुसंधान समस्या की पहचान एवं चयन –

एक समस्या का चुनाव अपने आप में शोध अध्ययन के वास्तविक क्रियान्वयन से कम नहीं है। वास्तव में शोध समस्या का चयन या उससे अवगत होना शोध अध्ययन के क्रियान्वयन से पहले किया हुआ ऐसा नियोजन है जिससे कोई अपनी यात्रा प्रारंभ करने से पूर्व इस बात से अवगत होता है कि उसे जाना कहाँ है करलिंगर के अनुसार, "अगर कोई समस्या का ~~सम~~ समाधान चाहता है तो उसे सामान्यतः यह जानकारी होनी चाहिए कि समस्या क्या

Scanned with CamScanner

है। फिर यह भी अच्छी तरह कहा जा सकता है कि अधिकांशत: समस्या का निचोड़ इसी बात में निहित रहता है कि कोई क्या करने की कोशिश कर रहा है।"

इसीलिए निष्कर्ष रूप में जब कोई किसी शोध कार्य को करने के बारे में सोचता है तो उसे सबसे पहले यह जानना चाहिए कि वास्तव में वह चाहता क्या है? और इसी चाहत के अनुसार ही फिर उसे किसी अच्छी लाभदायक और कार्यकारी शोध समस्या की पहचान और उसके चयन में जुट जाना चाहिए। इसके लिए शोधकर्ताओं को कुछ सोपानों का पालन करना चाहिए -

① रुचि विशेष के किसी एक बड़े क्षेत्र या विषय की पहचान करना -

अनुसंधानकर्ता का पहला कार्य है अपने अनुसंधान के विषय या एक बड़े क्षेत्र की पहचान करने के लिए अपने आप को पूर्ण रूप से तैयार करना। सामान्यत: यह कार्य निम्न कारकों पर आधारित होता है :-

a) उसकी अपनी रुचि

b) उसके पूर्व अनुभव या अध्ययन

c) एक विद्यार्थी / कर्मी / व्यवसायी के रूप में अपने कार्य क्षेत्र में महसूस की गई कठिनाई या समस्या।

d) भावी योजनाओं के आदेश पूर्ति ~~हेतु~~ -

② चयन किए गए क्षेत्र में शोध समस्या का पता लगाने हेतु संभावित स्रोतों की

Scanned with CamScanner

खोज करना :- अपनी रुचि के विस्तृत क्षेत्र और विषय में संबंधित शोध समस्या की पहचान तथा चयन करने के लिए इस दूसरे सोपान पर शोधकर्ता को अब विभिन्न शोध समस्याओं या प्रकरणों के बारे में सभी संभव स्रोतों या तरीकों से कुछ संकेत या सुझाव प्राप्त करने के प्रयास करने पड़ते हैं। इस संबंध में अनुसंधानकर्ताओं को जो स्रोत उपलब्ध होते हैं वह कुछ निम्न प्रकार के हो सकते हैं :-

1) पूर्व अनुभव या अध्ययन (past experiences or study)

2) उपलब्ध सिद्धांतों का परीक्षण - Testing of available theories

3) शोध समस्या के बारे में सुझाव

4) वर्तमान में उपलब्ध शोध कार्य

5) तकनीकी प्रगति और सामाजिक विकास

6) वरिष्ठ शोधकर्ताओं तथा शोध मार्गदर्शकों से विचार - विमर्श करना

3) एक शोध समस्या की पहचान या चयन - (Identifying or selecting a Research Problem) - द्वितीय सोपान पर किए गए प्रयास अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान अध्ययन के लिए एक विशिष्ट समस्या को ढूँढने या प्राप्त करने में काफी सहायता कर सकते हैं। परंतु एक अनुसंधान समस्या

Scanned with CamScanner

को प्राप्त कर लेने का यह अर्थ नहीं है कि अनुसंधानकर्त्ता द्वारा किए जाने वाले अनुसंधान अध्ययन के लिए यही समस्या या प्रकरण निश्चित हो गया है। अनुसंधान समस्या के मूल्यांकन के लिए सामान्यतः जो कसौटी अपनाई जाती है उस पर खरा उतरने या असफल होने पर ही इस समस्या की स्वीकृति या अस्वीकृति के समान मौके होते हैं। सामान्य रूप से यह कसौटी निम्न प्रश्नों ~~के~~ स्वीकारात्मक उत्तरों से युक्त होती है —

a) क्या यह रुचिकर है? — यदि समस्या अनुसंधान कार्य करने वाले के लिए अरुचिकर और उबाऊ है तो इस बात आशा कम ही है कि वह इस कार्य के साथ न्याय करेगा या नहीं।

b) क्या यह नवीन है? — यदि इस समस्या या विषय पर पहले ही किसी अनुसंधानकर्त्ता द्वारा कार्य कर लिया गया है तो इसी पर पुनः कार्य करना महज़ समय नष्ट करना ही सिद्ध होगा।

c) क्या यह महत्वपूर्ण है? — यदि इसकी कोई उपयोगिता नहीं है, ना तो यह ~~ज्ञान~~ ज्ञान में कुछ नवीन वृद्धि करती है और ना ही यह वर्तमान चालू या कार्य कर रहे तौर-तरीकों में कुछ सुधार ला

Scanned with CamScanner

या इन्हें उन्नत बनाने का सुझाव नहीं देती है तो इस पर कार्य करना व्यर्थ है।

d) क्या इसका क्रियान्वयन संभव है?— एक समस्या रुचिकर भी हो, नवीन भी हो, उपयोगी भी हो, परंतु किसी विशेष योग्यता के अनुसंधान कार्यकर्ता के लिए वह एक अच्छी समस्या सिद्ध नहीं भी हो सकती है और वह इसे एक सफल निष्कर्ष पर ले जाने में असफल भी हो सकता है। इसीलिए उसे निम्न बातें अपने आप से पूछनी चाहिये :—

(i) यह समस्या जिस प्रकार का अध्ययन चाहती है क्या मुझमें इसके अनुसार योजना बनाने और उस पर कार्य करने की आवश्यक क्षमता है या नहीं?

(ii) क्या संबंधित प्रदत्त या आंकड़े आसानी से मिल जाएंगे?

(iii) क्या अनुसंधान कार्य की योजना बनाने और कार्य को पूरा करने में मुझे अपने सहयोगियों या विभागीय सदस्यों से समुचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा?

अनुसंधान अध्ययन करने के लिए क्या मेरे पास आवश्यक आर्थिक साधन एवं स्रोत उपलब्ध है?

Scanned with CamScanner

(v) क्या इसके क्रियान्वयन के मार्ग में कठिनाई बाधाओं और अन्य रुकावटों के आने पर भी अध्ययन को जारी रखने के लिए मुझमें साहस और दृढ़ निश्चय की भावना है?

अनुसंधान समस्या का परिभाषीकरण और कथनीकरण -
(Defining and Stating the Research Problem):

ऊपर बताए गए सोपानों और प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए अनुसंधान कार्य के लिए समस्या की पहचान और चयन करने के उपरांत अब शोध-कर्ता को स्पष्ट रूप से यह जानकारी होनी चाहिए कि समस्या विशेष की प्रकृति और प्रयोजन क्या है? व्यवहारिक अर्थों में अनुसंधान समस्या को परिभाषित करने तथा उसका कथनीकरण करने के लिए क्या किया जाना चाहिए इस बात को संक्षिप्त रूप से निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है -

(i) समस्या का कथन - (Statement of the Problem)

समस्या के कथनीकरण से अभिप्राय अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने अध्ययन की पहचान की गई तथा चयन की गई अनुसंधान समस्या को एक नाम या ~~[illegible]~~ शीर्षक देना है। गुड और स्केटस के शब्दों में "जैसा कि ~~[illegible]~~ नियम है, एक

अनुसंधान समस्या / अध्ययन का शीर्षक किसी प्रकरण या संबंधित विशिष्ट क्षेत्र में नामकरण के सिवाय और कुछ नहीं करता।" इस प्रकार से अपनी अनुसंधान समस्या के कथनीकरण का कार्य करने में अनुसंधान-कर्त्ता को, अपने अनुसंधान अध्ययन की प्रकृति, कार्यप्रणाली और उद्देश्यों के साथ जो सर्वथा उचित लगे, वही नाम देना चाहिए।

अपने व्यवहारात्मक क्रियान्वयन में यह कार्य वास्तव में अनुसंधानकर्त्ताओं से बहुत कुछ सावधानी, बौद्धिक चिंतन और उचित वाक्य निर्माण की अपेक्षा करता है। समस्या का कथन या नामकरण करने हेतु एक अनुसंधानकर्त्ता निम्न 2 प्रारूपों में से किसी एक का चुनाव कर सकता है:-

i) समस्या का प्रश्न के रूप में कथनीकरण।

ii) समस्या का घोषणात्मक कथनों के रूप में कथनीकरण।

परंतु अपनी अनुसंधान समस्या के कथनीकरण में एक अनुसंधानकर्त्ता को निम्न प्रकार की सामान्य त्रुटियों से बच कर रहना चाहिए -

i) एक विशिष्ट समस्या के बजाय अध्ययन के ए विशाल क्षेत्र का नाम देना

ii) एक प्रकरण को इतना सीमित या छोटा क

Scanned with CamScanner

इसका दिया हुआ उत्तर इस प्रकार का होना चाहिए कि इससे अध्ययन के बारे में कौन, कहाँ, कब और कितने जैसे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो सकें।

b) प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषाएँ — समस्या के कथनीकरण में कुछ विशिष्ट तकनीकी पदों को रखा जाता है। अतः अनुसंधानकर्ता के लिए यह ज़रूरी होता है कि वह इन पदों को परिभाषित करे और यह ज़्यादा अच्छा होगा कि वह इन्हें संक्रियात्मक रूप से परिभाषित करे ताकि उनमें आवश्यक स्पष्टता आ जाए और किसी भी प्रकार की अस्पष्टता तथा गलत अर्थापन न हो सके। बिलकुल इसी तरह अनुसंधान समस्या में प्रयुक्त होने वाले कुछ पदों के बारे में भी उल्लेख किया जाता है। इन पदों को भी संक्रियात्मक शब्दावली में स्पष्ट रूप से परिभाषित करना ज़रूरी होता है।

c) आधारभूत / मूल मान्यताओं को लिखना — (Writing Basic Assumptions) — किसी भी अनुसंधान समस्या की कैसी भी प्रकृति क्यों न हो, इसका अध्ययन और अन्वेषण सामान्य रूप से कुछ आरंभिक मान्यताओं पर आधारित होता है। इन सभी में से कुछ ऐसी होती हैं जिन्हें उनके स्वीकारात्मक मूल्यों, जिन्हें प्रतिदिन के जीवन में उनके

Scanned with CamScanner

उपयोग या फिर व्यवहारिक विज्ञानों के क्षेत्र में सर्वमान्य शब्दावली के रूप में मान्यता मिलने की वजह से बिना किसी विवेक के स्वीकार कर लिया जाता है। फिर भी अनुसंधान अध्ययनों में ऐसी बहुत सी मान्यताएं होती हैं जो अध्ययन विशिष्ट होती है और अनुसंधान समस्याओं की परिभाषा में इनका विशिष्ट रूप से स्पष्टतापूर्वक उल्लेख होना चाहिए।

d) सीमाओं का उल्लेख करना - (Mentioning the limitations)

अपने अनुसंधानात्मक प्रश्नों की आवश्यकता के अनुसार अपना अनुसंधान करने हेतु एक अनुसंधानकर्ता के मार्ग में एक या अन्य प्रकार की ऐसी सीमाएं आ सकती हैं जिसके परे जाना अनुसंधानकर्ता की सामर्थ्य से बाहर होता है। उदाहरण के लिए - उसे अपने अनुसंधान कार्य हेतु अधिक कक्षाओं की आवश्यकता हो सकती है, उसे अपने अध्ययन के प्रयोजनों के साथ पूर्व निर्धारित समय से ज़्यादा समय व्यतीत करने की आवश्यकता पड़ सकती है। परंतु प्रशासनीय नीतियों या समय की उपलब्धता, वित्तीय कमी और पारिवारिक जिम्मेदारियों से युक्त उसकी अपनी सीमाएं उसे उचित रूप से अनुसंधान करने में बाधा बन सकती हैं। अपनी अनुसंधानात्मक समस्या को परिभाषित करते समय अनुसंधानकर्ता को अपनी इस प्रकार की सीमाओं का अच्छी तरह उल्लेख करना चाहिए।

Scanned with CamScanner